२. संतों के कार्य

महाराष्ट्र में श्रीचक्रधर, संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर, संत चोखामेला जैसे संतों से संत परंपरा प्रारंभ हुई । इस संत परंपरा को समाज के विभिन्न वर्गों से आए हुए संतों ने आगे बढ़ाया । इन संतों में संत गोरोबा, संत सावता, संत नरहरी, संत एकनाथ, संत शेख मुहम्मद, संत तुकाराम, संत निलोबा आदि संतों का समावेश होता है । इसी तरह संत जनाबाई, संत सोयराबाई, संत निर्मलाबाई, संत मुक्ताबाई, संत कान्होपात्रा और संत बहिणाबाई शिऊरकर का भी समावेश होता है ।

इन संतों ने लोगों को दया, अहिंसा, परोपकार, सेवा, समता तथा बंधुता आदि गुणों की शिक्षा दी । कोई छोटा नहीं; कोई बड़ा नहीं, सभी समान हैं; यह समता भाव उन्होंने लोगों के मन में उत्पन्न किया । इसी भाँति महाराष्ट्र में समर्थ रामदास ने भी अपना कार्य किया ।

श्रीचक्रधर स्वामी : श्रीचक्रधर स्वामी मूलतः गुजरात के राजपुत्र थे । वे संन्यास धारण कर महाराष्ट्र में आए । यहाँ भ्रमण करते हुए उन्होंने समता का उपदेश दिया । उन्हें स्त्री-पुरुष, जाति-पाँति जैसा भेदभाव मान्य नहीं था । इसी कारण अनेक स्त्री-पुरुष उनके अनुयायी बने । उनके द्‌वारा स्थापित पंथ को 'महानुभाव पंथ' कहते हैं । 'लीलाचरित्र' नामक ग्रंथ श्रीचक्रधर स्वामी के संस्मरणों का संग्रह है ।

श्रीचक्रधर स्वामी

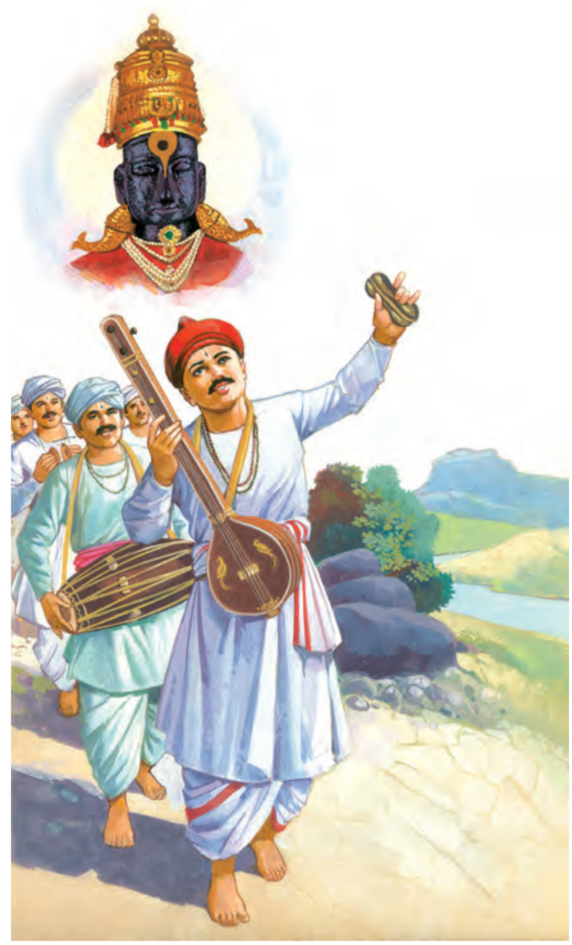

संत नामदेव

संत नामदेव : संत नामदेव विठ्ठल के परम भक्त थे । वे नरसी गाँव के रहनेवाले थे । उन्होंने अनेक 'अभंग' रचे, कीर्तन किए और जनता में जागृति उत्पन्न की । भागवत धर्म के प्रसार के लिए वे महाराष्ट्र में जगह-जगह घूमे । उन्होंने लोगों को अगाध भक्ति की शिक्षा दी । लोगों के मन में धर्म रक्षा और भक्ति भाव के प्रति दृढ़ आस्था का निर्माण किया । आगे चलकर संत नामदेव ने भारत भ्रमण किया और मानव धर्म का संदेश पहुँचाया । वे पंजाब गए। वहाँ उन्होंने लोगों को समानता का संदेश दिया। उन्होंने हिंदी भाषा में पद लिखे । उनके कुछ पद आज भी सिखों के धर्मग्रंथ 'गुरुग्रंथसाहिब' में संकलित हैं । महाराष्ट्र के घर-घर में उनके 'अभंग' बड़े भक्तिभाव से गाए जाते हैं ।

संत ज्ञानेश्वर : संत ज्ञानेश्वर आपेगाँव के रहने वाले थे । निवृत्तिनाथ और सोपानदेव उनके भाई थे तथा मुक्ताबाई उनकी बहन थीं । उस समय के कट्टरपंथी लोग इन बच्चों पर संन्यासी के बच्चे कहकर दोष लगाते थे । उसका कारण यह था कि उनके पिता जी ने संन्यास धारण कर लिया था। फलतः उन्होंने घर-द्वार छोड़ दिया था। उसके पश्चात गुरु जी की आज्ञा से वे फिर घर वापस आए और एक गृहस्थ का जीवन बिताने लगे । कालांतर में उनकी ये चार संतानें हुईं । उस समय के कट्टरपंथी लोगों को यह मान्य नहीं था । लोगों ने उनका बहिष्कार किया । लोग उन बच्चों को प्रताड़ित करते थे ।

एक बार संत ज्ञानेश्वर झोली लेकर गाँव में गए परंतु किसी ने उन्हें भिक्षा नहीं दी । सभी जगह उन्हें जली-कटी बातें सुननी पड़ीं । इससे उनके बाल मन को बहुत दुख हुआ । वे अपनी झोंपड़ी में आए और झोंपड़ी का दरवाजा बंद करके अत्यंत दुखी होकर बैठ गए । उसी समय वहाँ मुक्ता आ गईं । घास-फूस के बने दरवाजे को खटखटाकर वह संत ज्ञानेश्वर से कहने लगीं, ''ज्ञानेश्वर भैया ! दरवाजा खोलो । आप ही निराश और दुखी होंगे तो कैसे चलेगा ! संसार का कल्याण कौन करेगा ?'' बहन की बातें सुनकर वे उत्साहित हुए । अपना दुख भूलकर वे सामाजिक कार्य में जुट गए । उस समय जगह-जगह गरीबों और पिछड़ी जातियों को धर्म के नाम पर सताया जाता था । संत ज्ञानेश्वर ने लोगों को अंतःकरण से उपदेश दिया - ''ईश्वर पर श्रद्धा रखो । सभी के साथ समता का आचरण करो । दुखी लोगों की सहायता करो; उनके दुख दूर करो ।'' विगत सात सौ वर्षों से उनके उपदेश महाराष्ट्र के कोने-कोने में लगातार गूँज रहे हैं ।

संत ज्ञानेश्वर

उस समय धर्म का ज्ञान संस्कृत ग्रंथों में ही बंद था । सर्वसामान्य लोगों की बोलचाल और कामकाज की भाषा मराठी ही थी । संत ज्ञानेश्वर ने मराठी भाषा में 'ज्ञानेश्वरी' नामक महान ग्रंथ लिखा । धर्म के ज्ञान भंडार को उन्होंने सबके

संत एकनाथ

लिए खोल दिया । लोगों को बंधुता की शिक्षा दी । संत ज्ञानेश्वर ने युवावस्था में ही पुणे के पास आलंदी नामक गाँव में जीवित समाधि ले ली । आज भी लाखों लोग प्रति वर्ष आषाढ़ी और कार्तिकी एकादशी के दिन बड़े भक्तिभाव से आलंदी और पंढरपुर जाते हैं ।

संत एकनाथ : संत नामदेव तथा संत ज्ञानेश्वर की कार्य परंपरा को आगे चलाने का कार्य संत एकनाथ ने किया । संत एकनाथ पैठण के रहने वाले थे । उन्होंने भक्तिमार्ग का प्रचार किया । उन्होंने बहुत-से 'अभंग', ओवियाँ (सबद) और भारूड़ (व्यंग्य गीत) लिखे । 'किसी भी प्रकार का ऊँच-नीच का भेद मत मानो', यह उपदेश उन्होंने लोगों को दिया और भक्ति की महानता समझाई । गरीब तथा पिछड़ी जाति के लोगों को उन्होंने अपनाया । इतना ही नहीं बल्कि मूक प्राणियों पर भी उन्होंने दया की । उन्होंने लोगों को 'प्राणिमात्र पर दया करो', का उपदेश किया । संत एकनाथ जैसा कहते थे; वैसा ही करते थे ।

एक दिन वे गोदावरी नदी में स्नान करने के लिए जा रहे थे । दोपहर का समय था, चिलचिलाती धूप थी । नदी तट की रेत तप रही थी । वहाँ पर एक असहाय बच्चा बैठा हुआ रो रहा था । उसके रोने की आवाज संत एकनाथ के कानों में पड़ी । उन्होंने उसके माता-पिता को ढूँढ़ने के लिए अपनी दृष्टि इधर-उधर दौड़ाई । वे दौड़ते हुए उस बच्चे के पास गए । उन्होंने उस बच्चे को उठाकर गोद में ले लिया । उसकी आँखें पोंछीं । उसे उसके घर पहुँचाया ।

इस प्रकार स्वयं के व्यवहार से संत एकनाथ ने लोगों के मन में समता तथा ममता की भावना दृढ़ की ।

संत तुकाराम : शिवाजी महाराज के समय संत तुकाराम तथा रामदास नामक संत हुए । संत तुकाराम पुणे के पास देहू नामक गाँव में रहते थे । उनकी खेती-बाड़ी थी और अनाज की दुकान भी थी । उनके पूर्वज संकटग्रस्त लोगों को ऋण देते थे पर संत तुकाराम ने अपने हिस्से में आए ऋणपत्रों को इंद्रायणी नदी में डुबो दिया और लोगों को ऋण से मुक्त कर दिया । पास की पहाड़ी पर जाकर वे विठ्ठल

के भजन करते थे । आषाढ़ तथा कार्तिक महीने में वे पंढरपुर जाते थे । वहाँ वे कीर्तन करते, 'अभंग' रचते और लोगों को अभंग गाकर सुनाते थे । हजारों लोग उनका कीर्तन सुनने के लिए आते थे । शिवाजी महाराज भी उनका कीर्तन सुनने के लिए जाया करते थे । संत तुकाराम लोगों को दया, क्षमा और शांति की शिक्षा देते थे, समानता का उपदेश देते थे ।

संत तुकाराम

'जे का रंजले गांजले । त्यांसी म्हणे जो आपुले
तोचि साधु ओळखावा । देव तेथेचि जाणावा ।'

अर्थात 'दुखी और पीड़ितों को जो अपना समझता है; वही सच्चा साधु है । उसी को ईश्वर समझो ।' यह संदेश उन्होंने लोगों को देकर विचारशील बनाया । लोग संत तुकाराम की जयजयकार करने लगे । आज भी महाराष्ट्र में हमें 'ज्ञानबा-तुकाराम' का जयघोष सुनाई देता है । ज्ञानेश्वर को ही ज्ञानबा कहते हैं । आज भी 'तुकाराम गाथा' का पाठ घर-घर में होता है ।

समर्थ रामदास : इसी कालखंड में महाराष्ट्र की पर्वतीय घाटियों में समर्थ रामदास का नारा 'जय जय रघुवीर समर्थ' गूँज रहा था । उनका जन्म मराठवाड़ा में गोदावरी नदी के किनारे जांब नामक गाँव में रामनवमी के दिन हुआ । रामदास का मूल नाम नारायण था परंतु वे स्वयं को 'राम का दास' कहलवाने लगे । उन्होंने अपने 'दासबोध' ग्रंथ के माध्यम से लोगों को अमूल्य उपदेश दिया । उसी प्रकार उन्होंने 'मनाचे श्लोक' (मन के श्लोक) नामक रचना द्वारा लोगों को सद्विचार और सद्व्यवहार की शिक्षा दी । शक्ति की उपासना के लिए उन्होंने जगह-जगह हनुमान जी के मंदिर बनवाए । लोगों को शक्ति की उपासना करना सिखाया । 'क्रांति में

समर्थ रामदास

बड़ी शक्ति होती है । जो क्रांति करता है; वह समर्थ होता है ।' यह संदेश उन्होंने लोगों को दिया । समर्थ रामदास ने लोगों को संगठन बनाने तथा अन्याय का विरोध करने की प्रेरणा दी । तत्कालीन लोगों में साहस का निर्माण हुआ ।

साधु-संतों के कार्यों से लोग जागृत हुए । धर्म के प्रति आदरभाव बढ़ा । लोगों के मन में आत्मविश्वास पैदा हुआ । संतों के इन कार्यों का उपयोग शिवाजी महाराज ने स्वराज्य स्थापना के लिए किया ।

स्वाध्याय

१. रिक्त स्थान में उचित शब्द लिखो :

(अ) संत नामदेव .... के परम भक्त थे ।

(आ) संत ज्ञानेश्वर ने युवावस्था में ही पुणे के पास .... नामक गाँव में जीवित समाधि ले ली ।

(इ) संत तुकाराम ने अपने हिस्से में आए ऋणपत्रों को .... नदी में डुबो दिया ।

(ई) शक्ति की उपासना के लिए समर्थ रामदास ने जगह-जगह .... के मंदिर बनवाए ।

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) श्रीचक्रधर स्वामी को कौन-सा भेदभाव मान्य नहीं था ?

(आ) संत नामदेव ने लोगों के मन में किस दृढ़ आस्था का निर्माण किया ?

(इ) संत एकनाथ ने लोगों को कौन-सा उपदेश दिया ?

(ई) समर्थ रामदास ने कौन-सा संदेश दिया ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) संत ज्ञानेश्वर झोंपड़ी का दरवाजा बंद करके क्यों बैठ गए ?

(आ) संत तुकाराम ने लोगों को कौन-सा संदेश दिया ?

उपक्रम

पाठ में आए हुए संतों के अतिरिक्त अन्य संतों के चित्रों का संकलन करके नीचे उनके विचार लिखो ।

68T0S8